



मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री को बदले जाने के लॉक ब्राम्हण पत्रकारों ने लाबगि शुरू कर दी है. इंदौर के पैसे से भोपाल में पत्रकारों के लॉक कभोज रखा गया था. भोज तो दरसल कबहाना था. इंदौर के कबीजेपी नेता ने इस सब के प्रयोजति किया और ब्राम्हण पत्रकारों के उनक उचित स्थान दलिवाने के लॉक ब्राम्हण मुख्यमंत्री के वक्त की जरूरत बताया. हलांक इस आयोजन केजरथि कतीर से दो नशाने साधने की केशशि की गयी है. कतो ब्राम्हण मंत्रथि के इसकेजरथि सीम शविराज सहि से लड़वाने की केशशि है और दूसरा अगर यह लडाई शुरू होती है तो इसक सीधा लाभ इंदौर के दलिवायी जाये और मालवा केदमदार नेता कैलाश वजियवर्गीय के मुख्यमंत्री बनवाया जाये. इस सब जोर गणति केपीछे ब्राम्हण पत्रकारों के मोहरा बनाया जा रहा है.

गरीब गुरबे पत्रकार अपने ही बीच केकुछ दलले नुमा पत्रकारों की चाल के भोज करने केबाद ही समझ पा. भोज में शामिल अधकिंश पत्रकार भोज कर वापस हो लॉक क्यूंक इस आयोजन में जो चहरे सामने आये उनमे कुछ घोषति दलाल, कुछ घोषति शराबी और कुछ घोषति सूत्रीलोलुप पत्रकार थे. इनमे वे लोग भी शामिल है, जनिकेदामन पर अमानत में खयानत और लकीबाजी तककेदाग लगे है. इस भोज में गपत्रकार सुरेश शर्मा ने बताया कमुझे तो इनक जेंडा तकनहीं पता था. मुझे तो अचानक भाषण देने के खड़ा कर दिया गया. इसक औचित्य क्या था, मुझे तो यह तकनहीं पता था.

ब्राम्हण भोज के लॉक लाखों रूपये कइन्दौरी दलाल ने दॉक थे. उनक मकसद मुख्यमंत्री शविराज सहि केखलिफ ब्राम्हण पत्रकारों के कजुट करना और इस बात के पैलाना था कशविराज केसामने ब्राम्हण मंत्री अनूप मशिरा, गोपाल भार्गाव और लक्मीकंत शर्मा अब कचुनौती है लेकनि इस आयोजन में बचौलथि और कुछ चरतिरहीन ब्राम्हण पत्रकारों केसामने आने से यह शो फ्लॉप हो गया. अचछी संख्या केबावजूद सभी ब्राम्हण पत्रकारों के ककरा नहीं किया जा सक. इसमें शामिल दो पत्रकारों के लाल बतती चाहॉक थी तो आठ के सरकरी फिल्म केटेंडर तो बार्क के सप्लाई ऑडर चाहॉक थे. सबकेअपने-अपने जेंडे थे. इनमे से २७ लोग ऐसे थे जो पत्रकार बरिदरी में सरिफ कले कम के छुपाने के लॉक है.

Written by B4M  
Friday, 21 August 2009 13:57

---

□ कऐसा था जसिके चेहरे पर उसकेकले करनामों के कलखि सा□ न□ र आती है. इनमे कुछ अपने करनामों से इतने बदनाम हो चुकेहैं कि वे ऐसे आयोजन के जरथि अपने अस्तित्व के तलाश रहे हैं. इनमे से कुछ की चति यह थी कि उनकी सरकारी नौकरी वाली बीवयियों के तबादले न हों और अगर हो गया है तो उसे कैसे रुकनाया जाये. ब्राम्हण पत्रकारों की □ कता केनाम पर हु□ इस आयोजन से तमाम सारे उन पत्रकारों ने दूरी भी बनाये रखी जो सरिफ पत्रकरति में यकीन रखते हैं. इंदौरी अंदाज में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शविराज सहि के खलिाफ मोर्चा खोलने के इस अभयान की वैसे तो अपने आप ही हवा नकिल गयी क्यूंकि २७ लोग मलिकर क्मा खचिड़ी पक रहे हैं, यह बाकी पत्रकारों की समझ में आ गया.

कर्यक्रम में शामिल मनोज मशि्रा ने कहा कि "दलालों और चरतिरहीनों के रहते ऐसा कोई आयोजन सफल नहीं हो सकता क्यूंकि पत्रकरति किसी जाति विशेष से जुड़ा मसला नहीं है. हम सारे समाज के हैं, सरिफ ब्राम्हणों के नहीं. जो लोग भी इस आयोजन के पीछे हैं वे भी समझ लें कि पहले पत्रकर के पत्रकर बन जाने दो, परि उसे ब्राम्हण और राजपूत या दीगर जात में बाँटना. वैसे भी उस आयोजन में जो लोग सामने थे, उनके लक्षण ब्राम्हणों वाले थे नहीं. कुछ की कम वासनायें उनके चेहरे पर थी तो कुछ सुबह से ही दारु पी कर चले आये थे.

इस आयोजन से उम्मीद थी कि सारे ब्राम्हण क्लमघसिसू □ क हो कर राजनीति में बदलाव की नई इबारत लिखेंगे लेकिन हुआ ठीक उसका उलटा. इनमे जनि चेहेरों के सामने लाया गया उनके करनामों से ब्राम्हण जाति और पत्रकरति दोनों शर्मसार हुई. सो अधकिंश ब्राम्हण पत्रकारों ने भोज कथिा और अपने-अपने घर खसिकली. आयोजन स्थल पर जो लोग बचे थे, वे सोंचे, वे क्मा वाकई पत्रकर है और क्मा सरिफ पत्रकरति कर रहे हैं या इसकी आड़ में उनकी मंशा कुछ और है.

---

[बी□ स मीणा के मीडिया हाउस ब्लाग से साभार](#)